मेरा मकसद किसी की भावना को आहत करना नही पर इंसान होने के कारण सोचता हूँ.....

हाथी का पैर मगरमच्छ ने पकड़ लिया तो उसने हरि को पुकारा । हरि नंगे पाँव दौड़े आये और मगरमच्छ का वध कर गज को मुक्त कराया ।

- दुशासन ने द्रोपदी का चीर हरण किया तो उसने भी हरि को पुकारा हरि ने आकर उसको भी बचाया ।
- होलिका ने प्रह्लाद को जलाने की कोशिश की तो प्रह्लाद ने हरि को पुकारा हरि उसको भी बचाने आया ।
- गोकुल ग्रामवासियों ने इंद्र के प्रकोप बाड़ से बचाने हरी को बुलाया, हरी ने गोवर्धन पर्वत एक उँगली से उठाकर उनको बचाया।
- दो चार आप खुद जोड़ लीजिये।
- अब वास्तविक घटनाओं पर आ जाइये ??
- महमूद गजनवी ने भारत पर 17 आक्रमण किये, सोमनाथ का मंदिर लूटा और भयानक मार काट की । भक्तो ने फिर भगवान को पुकारा । गजनवी के सैनिक रक्तपात करते रहे लेकिन कोई भगवान नही आया।
- भारत पर हमला करने शक, तुर्क, गौरी, ख़िलजी, तुगलक, सैयद, लोदी, मुग़ल, डच, अंग्रेज़ आये, लेकिन भारत भूमि को लम्बी गुलामी से बचाने कोई हरि नहीं आये ।
- औरंगज़ेब ने आपके भक्तों को मार मार मुसलमान बनाया, लेकिन आप सहायता को नहीं आये।
- अब केदारनाथ में प्रलय आ गयी, 20000 भक्त मारे गए। भक्त फिर भगवान को सहायता के लिए पुकारते रहे लेकिन कोई भगवान नही आया । भक्त मरते रहे और भगवान देखते रहे..... आपने सिर्फ अपना घर यानि मंदिर बचाया ।
- अब नेपाल में भूकंप आया । भक्त फिर भगवान से प्रार्थना करने लगे लेकिन कोई भगवान नही आया बचाने ।
- इससे पहले भी भूकंप दंगे फ़साद या कोई अन्य त्रासदी होने पर भी सब भगवान को पुकारते रहे लेकिन कभी कोई भगवान नही आया ।

इससे क्या सिद्ध होता है.....

इससे सिर्फ एक ही बात सिद्ध होती है कि भगवान बचाने को तो आता है लेकिन सिर्फ़ मिथकीय किस्से कहानियों में ।

- अब अगला सवाल होता है कि भगवान कब सहायता करने आता हैं सीधी सी बात है जब लेखक भांग खाकर लिखने लग जाये तब।
- अगला सवाल भगवान किसकी मदद करता है।
- निष्कर्ष कहता है भगवान पौराणिक कथाओं के सिर्फ अपने जैसे ही काल्पनिक पात्रों की रक्षा करता हैं ।
- अगला सवाल भगवान कहाँ रहता है ।
- ईश्वर का अस्तित्व मानव मस्तिष्क के अलावा कहीं नहीं है। वो कुछ लोगों के दिमाग में डर के रूप में बसे होने के अतिरिक्त मिथकीय किस्से कहानियों में ही रहता है ।

इन तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष यह निकलता है कि

यथार्थ और वास्तविकता के धरातल पर न तो कभी किसी ने ईश्वर को देखा है और ना ही कभी कोई भगवान किसी की मदद में आयें है।

बाबा साहेब हमें समझाते है हमें अपनी मदद खुद करनी होगी जो कि सबसे अच्छी मदद होती है।

आस्तिक लोग कहते है कि भगवान की मर्जी के बिना तिनका भी नहीं हिल सकता। जो कुछ होता है वो सब काल्पनिक भगवान की मर्जी से होता है।

वैसे तो उसकी औकात तिनका हिलाने की भी नहीं, पर बलात्कार डाका लूटपाट धोखाधड़ी और जातियों के नाम पे शोषण अगर उसी काल्पनिक भगवान की मर्जी है और उसी के इशारे पे ये सब होता है तो वो पूजने लायक कैसे हुआ? -कमल

बिहार विधानसभा चुनाव : भगवा या नीतीश-लालू

पटना से विशेष प्रतिनिधि

पांच चरणों में होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव का पहला चरण पूरा हो गया। चुनाव नवंबर के पहले हफ्ते तक होंगे। अंतिम वोटिंग 5 नवंबर को होगी और 8 नवंबर को मतगणना शुरू हो जाएगी। उसी दिन बिहार की और एक तरह से देश की राजनीति की दिशा भी तय हो जाएगी। बिहार विधानसभा का यह चुनाव खास इसलिए भी है कि अगर इसमें भारतीय जनता पार्टी की जीत होती है, तो फिर नरेंद्र मोदी को तानाशाह बन जाने से कोई ताकत रोक नहीं पाएगी। बिहार विधानसभा चुनाव उन लोगों के लिए उम्मीद की आखिरी किरण की तरह है जो देश में भगवा शक्तियों के प्रसार से दुखी हैं।

भूलना नहीं होगा कि जब से केंद्र में नरेंद्र मोदी की सरकार आई है, देश में अराजक स्थितियां बनती जा रही है। मोदी जी ने जो भी वादे किए थे, सारे हवा.हवाई साबित हुए। अपना ज्यादा से ज्यादा समय विदेश घूमने में बिताने वाले मोदी जी बाकी समय यहां.वहां चुनाव प्रचार में लगाते रहे। मंचों से गर्जना करते रहे, विरोधियों पर प्रहार करते रहे, पर काम के नाम पर कुछ भी नहीं किया। महंगाई सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती रही। पर मोदी जी गरीबी कम होने के आंकड़े पेश करते रहे। इधर इनके सत्ता में आते ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मनोबल इतना बढ़ गया कि वह देश को हिंदू राष्ट्र घोषित करने पर आमादा हो गया। विरोधियों को धमकाया ही नहीं जाने लगा, उनकी हत्या तक की जाने लगी। विश्व हिंदू परिषद्, बजरंग दल और संघ के अन्य संगठनों ने अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफइतना जहर उगला कि उनके दिल में खौफ समा गया। स्थिति ऐसी बन गई जब उपराष्ट्रपति ने संयम बरतने को कहा तो मुसलमान होने के नाते संघ के लोगों ने उन पर भी शब्दवाण छोड़े।

अभी ताजा मामला दादरी हत्याकांड है, जिसमें एक मुस्लिम परिवार पर गोमांस खाने का आरोप लगाया गया और अफ्वाह फैलाकर भीड़ द्वारा एक व्यक्ति की जान ले ली गई। भीड़ द्वारा किसी निरीह व्यक्ति की जान लिए जाने की यह घटना स्वतंत्र भारत के इतिहास में शायद पहले कभी हुई या नहीं, ये तो पता नहीं, पर इसने दिखा दिया कि भाजपा और नरेंद्र मोदी के शासन में देश की हालत क्या हो गई है। नरेंद्र मोदी की सरकार हर मोर्चे पर फेल है। यह अलग बात है कि वे मंचों से चीख.चीख कर दूसरों से हिसाब मांगते हैं और कहते हैं कि वे खुद हिसाब तब देंगे जब पांच साल शासन कर लेंगे। देश में किसी भी प्रधानमंत्री ने इतनी चुनावी सभाएं नहीं की होंगी, जितनी मोदी जी ने की और अभी भी कर रहे हैं। इन्होंने विदेशों में भी अपने पद की मर्यादा का ध्यान नहीं रखा और वहां से दूसरे राजनीतिक दलों पर प्रहार किए। बहरहाल, बिहार में चुनाव प्रचार करते हुए इन्होंने सारी सीमाओं का उल्लंघन कर दिया है और मंचों से बहुत ही घटिया अंदाज में विरोधियों पर हमले कर रहे हैं। इसके जवाब में विरोधी भी उसी तरह से जवाब दे रहे हैं। लालू को इन्होंने शैतान और न जाने क्या.क्या कहा, तो लालू ने भी इन्हें ब्रह्मपिशाच कह डाला। कुल मिला कर मोदी जी ने सभी राजनीतिक मर्यादाओं को तोड़ डाला। लेकिन दूसरे दलों ने भी उनका जवाब अमर्यादित तरीके से ही दिया। यह दिखाता है कि राजनीति में अब वह घटिया दौर शुरू हो गया है, जो तभी खत्म हो सकता है जब आम जनता मूक दर्शक और वोटर की भूमिका से बाहर निकले।

बिहार में महागठबंधन यानी लालू.नीतीश को पहला झटका तब लगा जब मुलायम इससे बाहर निकल गए और उन्होंने भी अपने उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतार दिए। बावजूद बिहार में कोई जनाधार नहीं होने के कारण वे कुछ खास कर पाने की स्थिति में नहीं हैं। फिर भी जनता के सामने यह साफ हो गया कि महागठबंधन सिर्फ लालू और नीतीश का ही है। कांग्रेस की हालत तो पहले से बिहार में पतली रही है। पूरे देश में उसकी हालत खराब है। वामपंथियों की हालत भी वैसी ही है। ऐसे में महागठबंधन के पास भी ऐसा कोई सकारात्मक मुद्दा नहीं है, जिसके आधार पर वह मतदाताओं के मन में कोई उम्मीद जगा सके। जिस तरह संघ परिवार और भाजपा ने गोमांस का मुद्दा खड़ा कियाए जातिवाद का मुद्दा खड़ा कियाए बड़बोलापन दिखाया उसी प्रकार महागठबंधन के नेताओं के पास भी चुनावी वैतरणी पार करने के लिए जातिवाद ही एक मुद्दा है। मंडल पार्ट.2 के रूप में लालू ने इसी मुद्दे को सबसे आगे किया है। अब देखना है कि इसमें उसे कहां तक सफलता मिलती है।

बहुत से लोगों का मानना है कि बिहार में भाजपा की जीत होगी। इसकी वजह यह बताई जा रही है कि युवा वर्ग मोदी जी का समर्थक है। उनके नारे चाहे झूठे ही क्यों न हों, युवाओं को लुभा रहे हैं। भाजपा के जीतने की संभावना ज्यादा इसलिए भी बताई जा रही है, क्योंकि बिहार में अब तक लालू और नीतीश का शासन ही लोगों ने देखा है। अभी मोदी जी के शासन का स्वाद नहीं लिया है। कुछ लोगों का मानना है कि महागठबंधन की ही जीत होगी, क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर मोदी जी की असफलता सामने आ चुकी है। उनके खोखले वादों और नाटकीयता से लोग परेशान हो गए हैं। जहां तक उनकी सभाओं में भीड़ जुटने का सवाल है, तो कहा जा रहा है कि मोदी जी भाषण देकर जनता का मनोरंजन भी करते हैं। यह काम लालू जी भी करते हैं। इसलिए इनकी सभाओं और रैलियों में भीड़ जुटती है। पर ये भीड़ वोट किसे देगी, यह समझ पाना इतना आसान नहीं है।

बहरहाल, कतिपय लोगों का विचार है कि सांप्रदायिक ताकतों को देश पर हावी होने से रोकने के लिए यह जरूरी है कि बिहर में मोदी की हार हो। लेकिन इसमें कोई खास तर्क नहीं है। आखिर मोदी देश की सत्ता पर काबिज हुए तो इसके पीछे कांग्रेस, वामपंथी और उन दलों की नीतियों का खोखलापन ही रहा है, जो अभी महागठबंधन में शामिल हैं। जाति के नाम परए धर्म के नाम पर जब तक वोट मांगे जाते रहेंगे, आम लोगों को कोई लाभ नहीं मिल सकेगा।

यह अलग बात है कि अगर बिहार में महागठबंधन यानी नीतीश.लालू की जीत होती है, तो मोदी को राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा झटका लग सकता है। पर इससे आम जनता को वास्तविक विकल्प नहीं मिलेगा। जनविकल्प लालू.नीतीश नहीं हो सकते। हां, यह भगवा ताकतों के लिए निराशाजनक हो सकता है पर उनकी चुनौती प्रबल है।

तुर्की-ब-तुर्की / मेरे रहते शैतान लालू के पास - मोदी

''मुझे हैरानी है कि शैतान को प्रवेश करने के लिये उनका (लालू) ही शरीर मिला। मैं जानना चाहता हूं कि शैतान को उनका पता कैसे मिला?'' - नरेन्द्र मोदी बोले बिहार में।

हमारा कहना है-

मोदी जी बात तो आपने बड़ी सही पूछी। भला आपके रहते शैतान का ध्यान किसी और की तरफ़ कैसे जा सकता है? आप तो शैतानियत के हर मापदण्ड पर खरे उतरते हैं। लालू बेचारे की क्या औकात जो आपके मुकाबले में ठहर सके। निश्चित ही शैतान से बड़ी भूल हुई है। ठीक किया जो आपने समय रहते आपनी अर्जी आगे बढा दी है। यदि शैतान आपकी बात न सुने तो आप महान शैतान यानी संघ मुखिया मोहन भागवत के पास अपील कर सकते हैं।

भला शैतान आपको कैसे मिस कर सकता है? सन् 2002 का गुजरात नरसंहार तो ऐसा था कि बुरे से बुरे शैतान के भी रोंगटे खड़े हो गये थे। पूंजीशाहों के खजाने को भर कर किसानों को आत्महत्या के दरवाजे पर ले जाने वाला आपका कृत्य क्या कोई छोटी शैतानियत है? आपके प्रधानमंत्री बनने के बाद देश में आई साम्प्रदायिक दंगों की बाढ एक शैतान को ही तो शोभा देती है। काला धन, मंहगाई, भ्रष्टाचार और बेरोज़गारी के कमरतोड़ पहाड़ जनता के ऊपर एक शैतान ही तो लाद सकता है। ऐसे में हम आपके इस दावे का समर्थन करते हैं कि शैतान को लालू की खोज में अपना वक्त बर्बाद नहीं करना चाहिये था।

इधर गौरक्षा का कठोर संकल्प और उधर गौमांस का बढता निर्यात-यह शैतानी मिशन मोदी जी आपके द्वारा ही तो पूरा किया जा रहा है। बूचड़खानों के आधुनिकीकरण पर भारी सब्सिडी देकर पिंक रिवोल्यूशन का झंडा बुलंद करना यानी जनता का 'उल्लू बनाविंग' कोई आप जैसे शैतान से सीखे। यहां तक कि स्वयं शैतान को ऐसा छल-कपट सीखना हो तो उसे भी आपके पास ही आना पड़ेगा।

मोदी जी आपका दर्द यही तो है कि आपके रहते शैतान का प्रवेश लालू के शरीर में क्योंकर हुआ? आपने लालू को शैतान बताया और उन्होंने पलट कर आपको ब्रह्मराक्षस कह डाला । अगर कहीं महिला-नेताओं ने चुनाव प्रचार की इस गर्मी में एक दूसरे को डायन, चुड़ैल या भूतनी कहा होता तो हमारे मर्द संसार में पता नही मीडिया ने कितना शोर मचाया होता। अब, आप और लालू मर्दानगी के नाम पर भाषा के जो जौहर दिखा रहे हैं उस से देश के राजनीतिक नेताओं की बौद्धिक सीमाओं का पता चल ही जाता है। खैर, अब जब शैतानों और ब्रह्म-राक्षसों को उनके राजनीतिक प्रतिनिधि मिल गये हैं, देखना है बिहारियों को उनके प्रतिनिधि कब मिलेंगे?

□ □ □